प्रकाशन तिथि : 15 दिसम्बर, 2021
प्रेषण तिथि : 19 दिसम्बर, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 19 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हीरक जयंती समारोह हेतु तैयारी व संपर्क बैठकों की श्रृंखला

22 दिसंबर को जयपुर में होने वाले हीरक जयंती महोत्सव की तैयारी के लिए संघ के सम्पूर्ण कार्यक्षेत्र में बैठकों का आयोजन निरंतर जारी है। इस क्रम में 28 नवम्बर से 10 दिसंबर तक आयोजित बैठकों के तिथिनुसार संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, हालांकि विभिन्न क्षेत्रों में इनके अलावा भी अनेक बैठकें व संपर्क यात्राएं आयोजित की गई हैं, सबकी सूचना व समाचार नहीं मिल पाये हैं लेकिन जितने उपलब्ध हुए उन्हें पाठकों के साथ साझा किया जा रहा है। 28 नवंबर को जयपुर में श्री राम डिफेंस एकेडमी, पुरानी चुंगी, आगरा रोड पर माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास के सानिध्य में स्नेह मिलन आयोजित हुआ। संघप्रमुख

राजकोट

श्री ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम हमारी एकता के केवल प्रदर्शन का नहीं, बल्कि उसे सुदृढ़ करने का भी अवसर है। हमारे बंधुत्व का भाव और अधिक प्रबल बने, इसके लिए हम सभी सक्रिय होकर इस कार्यक्रम को अपना मान कर सहभागिता निभाएंगे, ऐसी श्री क्षत्रिय युवक संघ की चाह है। संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया, बीरबल सिंह बेहडखो, नानू सिंह रुखासर, भवानी सिंह मलारना सहित लगभग 150 समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। उदयपुर में सर्किट हाउस में भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत तथा राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति शिव सिंह सारंगदेवोत ने हीरक जयंती समारोह के पोस्टर का विमोचन किया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों सहित समाज के अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित रहे। दिल्ली एनसीआर प्रांत में 28 नवंबर को हीरक जयंती की तैयारी हेतु तीन बैठकें आयोजित हुई। फरीदाबाद में सेक्टर 8 स्थित राजकुल संस्थान महाराणा प्रताप भवन में प्रातः 11:00 बजे बैठक का आयोजन हुआ जिसमें स्थानीय समाज बंधुओं ने भाग लेकर हीरक जयंती हेतु प्रचार प्रसार की योजना बनाई तथा फरीदाबाद से हीरक जयंती समारोह में अपनी भागीदारी निभाने की प्रतिबद्धता जताई। एक अन्य बैठक राजपथ पर उद्योग भवन के पार्क में आयोजित हुई जिसमें दिल्ली से हीरक जयंती में 5 बसें व 20 छोटे वाहनों में संख्या पहुंचाने का निश्चय हुआ।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य श्री तनसिंह जी की 42वीं पुण्यतिथि

7 दिसंबर 2021 को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 42वीं पुण्यतिथि पर देशभर में समाजबंधुओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में श्री क्षत्रिय युवक संघ के अधिकृत ट्विटर एकाउंट से वर्चुअल ट्विटर स्पेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि अंग्रेजों ने जिस प्रकार से हमारी मोचार्बंदी कर-के मनोवैज्ञानिक आक्रमण हम पर किया, उससे जितना नुकसान राजपूत कौम को हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ था। पूज्य तनसिंह जी का यह मानना था कि हमारी कौम का यदि सर्वस्व भी छिन जाता है, उसके पश्चात भी यदि कर्तव्य के लिए मरने की कला हमारे में शेष रह जाए तो कोई भी आक्रमण हमें समाप्त नहीं कर सकता। (शेष पृष्ठ 2 पर)

'संघशक्ति' में हीरक जयंती संदेश यात्रा का भव्य स्वागत

बाड़मेर स्थित पूज्य तनसिंह जी सदन से 22 नवंबर को प्रारंभ हुई हीरक जयंती संदेश यात्रा का काफिला 3 दिसंबर की शाम को 'संघशक्ति' जयपुर पहुंचा जहां उसका भव्य स्वागत किया गया। 2500 किलोमीटर लम्बी यात्रा पूरी करके सैकड़ों गांवों से होते हुए केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' पहुंचे यात्रा के रथ का माननीय संरक्षक भगवान सिंह जी रोलसाहबसर, माननीय संघ प्रमुख लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी ने पुष्पवर्षा द्वारा स्वागत किया। शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व स्वयंसेविकाएँ भी यात्रा के स्वागत के लिए संघशक्ति पहुंचे। माननीय संरक्षक ने यात्रा में सम्मिलित स्वयंसेवकों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि महापुरुष जहां विचरण करते हैं, वह तीर्थ स्थान बन जाता है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

श्रद्धापूर्वक मनाई पूज्य श्री तनसिंह जी की 42वीं पुण्यतिथि

(पेज एक से लगातार)

लेकिन अंग्रेजों की चाल में फंसकर हम अपने कर्तव्य को भूल गए। हम अपने इतिहास को भूलते जा रहे थे, हमारी गौरवपूर्ण परंपराओं को भूलते जा रहे थे और इनको भूलने से हमारा ऐतिहासिक गौरव समाप्त होता जा रहा था। जब किसी समाज का, कौम का गौरव समाप्त हो जाता है तो वह कितनी भी कट्टर और सक्रिय हो आगे नहीं बढ़ सकती। इसलिए पूज्य तन सिंह जी के मन में समाज के लिए पीड़ा जगी क्योंकि जब देश आजाद हो रहा था तब की परिस्थितियों से उन्हें पता चल चुका था कि हमारी आने वाली पीढ़ी को क्षात्र धर्म के दर्शन को बताने वाला कोई नहीं होगा। पहले जिस प्रकार गुरुकुल में, हमारे अपने परिवारों में इस प्रकार का दर्शन और शिक्षण मिला करता था, मातृभूमि के लिए मरने की सीख मिलती थी, 'इला न देणी आपणी' का जो संदेश माताओं द्वारा पालनों में ही क्षत्रिय बालकों को मिलता था वह सब समाप्त हो रहा है। आजादी से पूर्व ही पूज्य तनसिंह जी यह जान चुके थे कि आजादी के साथ सभी समाजों को कुछ न कुछ मिलने वाला है लेकिन हमारी कौम का गौरव खोने वाला है। उनकी इसी व्यथा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ को जन्म दिया और श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए उन्होंने जो विधि अपनाई वह है - सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली। क्योंकि किसी भी प्रशिक्षण का प्रभाव तब सर्वाधिक पड़ता है जब वह प्रशिक्षण सामूहिक हो। नियमितता और निरंतरता श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण के अनिवार्य तत्व है क्योंकि नियमितता व निरंतरता ही व्यक्तिगत और सामाजिक रूपांतरण की कुंजी है। जिस प्रकार रस्सी के बार-बार आने जाने से पत्थर पर भी निशान पड़ जाता है, उसी प्रकार नियमित रूप से अभ्यास करके ही हम कुसंस्कारों को काटकर सद्संस्कारों का निर्माण कर सकते हैं। गीता में वर्णित क्षत्रिय के सातों गुणों का समावेश श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण में है। जो भी इस प्रक्रिया से होकर गुजरता है उसमें इन गुणों का आविर्भाव अनिवार्य रूप से होता है। लेकिन इस सांचे में ढ़लने के लिए हमें संघ की शाखाओं एवं शिविरों में निरंतर जाना पड़ेगा। संघ में लाखों लोग आए हैं लेकिन हर एक व्यक्ति पूर्ण रूप से संस्कारित हो गया हो ऐसा नहीं है क्योंकि यह एक उर्ध्वगामी साधना है जिसमें पतन की भी सदैव संभावना रहती है। इसीलिए ऊपर चढ़ने के लिए निरंतर जागृत रहने और संघर्ष की आवश्यकता होती है, जिसमें सभी नहीं टिक पाते। जिनके जीवन में नियमितता और निरंतरता आती है वही इसमें आगे बढ़ पाते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ को केवल सुनकर नहीं जाना जा सकता, यह वास्तव में अनुभव का विषय है, इसलिए संघ के प्रशिक्षण की प्रक्रिया से गुजर कर ही हम संघ को जान सकते हैं, आत्मसात कर सकते हैं। दूर से देख कर संघ को समझना संभव नहीं है क्योंकि यह प्रचार का विषय नहीं बल्कि जीवन में उतारने का विषय है। संघ का कार्य किसी जाति विशेष के हित में नहीं बल्कि संपुर्ण संसार के हित के लिए हैं क्योंकि क्षत्रिय कभी भी स्वयं के लिए या अपने परिवार के लिए या अपनी जाति के लिए नहीं बल्कि समस्त संसार के कल्याण के लिए लड़ा है। प्राणिमात्र के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने के अकल्पनीय उदाहरण क्षत्रियों ने रखे हैं। क्षत्रिय का जीवन सभी के लिए हैं इसीलिए और श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण में समस्त संसार का हित है। बाल्यकाल में जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह हमारे संपूर्ण जीवन की दिशा को निर्धारित करने की

क्षमता रखता है इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रारंभ से ही बालकों को शिविरों व शाखाओं के माध्यम से प्रशिक्षण देकर उनमें क्षत्रिय संस्कारों के शिक्षण का कार्य प्रारंभ कर देता है। 75 वर्षों से संघ निरंतर कार्य कर रहा है लेकिन एक संस्था के लिए 75 वर्ष बहुत कम होते हैं।

एक व्यक्ति के जीवन में भले ही यह बड़ी अवधि हो लेकिन एक संस्था के लिए तो यह शैशवावस्था के समान ही है। संघ के 75 वर्ष पूरे होने पर लोकसंग्रह के उद्देश्य से हीरक जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है क्योंकि लोकसंग्रह के माध्यम से समाजबंधुओं को अपनी ओर खींचने के बाद ही उन्हें शिक्षण दिया जा सकता है। उसी उद्देश्य से यह आयोजन किया जा रहा है और श्री क्षत्रिय युवक संघ आप सभी से इस में सहभागिता निभाने के लिए आह्वान करता है। कार्यक्रम में सैकड़ो की संख्या में समाजबंधुओं ने उपस्थित रहकर पूज्य श्री के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने पूज्य तनसिंह जी के व्यक्तित्व व कृतित्व की जानकारी प्रदान करते हुए कहा कि प्रायः हमारे यहां पुण्यतिथि मनाने की परंपरा नहीं होती है लेकिन जिन महापुरुषों की स्मृति मात्र से हमें प्रेरणा मिलती हैं उन्हें स्मरण करने के प्रत्येक अवसर का उपयोग किया जाना ही चाहिए, इसी भाव के साथ इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। पूज्य तनसिंह जी के विराट व्यक्तित्व को कुछ शब्दों में बांधना सम्भव नहीं है। पूज्य तनसिंह जी के जीवन को हम देखें तो वे एक लेखक भी थे, कवि भी थे, संगठनकर्त्ता भी थे तो राजनीतिज्ञ भी थे, वकील भी थे तो व्यवसायी भी थे। उन्होंने कृषि भी की, नगर परिषद के चेयरमैन भी रहे, विधायक व सांसद भी रहे। केवल 55 वर्ष की आयु में इस तरह का बहुआयामी जीवन अविश्वसनीय सा प्रतीत होता है। जिस भी क्षेत्र में उन्होंने कदम रखा उसके शिखर को छू लिया। लेकिन हमारे लिए उनका जो रूप सर्वाधिक वरेण्य है वह है - श्री क्षत्रिय युवक संघ। संघ के दर्शन में पूज्य तनसिंह जी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व समाया हुआ है। संघ ही उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति है, उस कृति को हम समझें और उसका अनुकरण करें यही उनके प्रति सच्ची कृतज्ञता होगी। कार्यक्रम के अंत में समाज बंधुओं ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली व उद्देश्य के संबंध में अपनी जिज्ञासाएं भी रखी जिनका समाधान केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा ने किया। जयपुर स्थित संघशक्ति कार्यालय में भी पुण्यतिथि कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक व समाजबंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि लगभग एक महीने से निरंतर श्री क्षत्रिय युवक संघ की हीरक जयंती पर आयोजित होने वाले समारोह के लिए संपर्क चल रहा है और हम आपस में निरंतर मिल रहे हैं। किस प्रकार से हमको कार्य करना है उस बारे में भी चर्चा निरंतर होती रही है। आज पूज्य तनसिंह जी की पुण्यतिथि पर भी एकत्रित होकर उन्हीं के चलाए हुए क्षत्रिय युवक संघ और हीरक जयंती पर हम चर्चा करेंगे। आपमें से अधिकांश लोग पूज्य तन सिंह जी के संबंध में जानते हैं। बहुत कम आयु में ही उनके पिताजी का देहांत हो गया था। हम कल्पना कर सकते हैं कि किन विपरीत परिस्थितियों में उनका प्रारंभिक जीवन गुजरा होगा। आर्थिक कठिनाइयों व अभावों से जूझते हुए उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। छोटी सी उम्र में ही उन्होंने संघर्षपूर्ण जीवन जीना प्रारंभ कर दिया था। चौपासनी व पिलानी में आगे की शिक्षा प्राप्त करते हुए अपने साथियों के अभावों को देखकर उनके हृदय में पीड़ा जगी और उन्होंने उन साथियों की सहायता करने के लिए छात्रावास की जमीन पर खेती की, दर्जी के पास जाकर सिलाई का काम किया, धनवान छात्रों के लिए दांतुन की व्यवस्था करके धन जुटाया। साथियों के प्रति उनकी पीड़ा सघन होकर समाज की स्थिति के प्रति व्यथा बनी। पिलानी छात्रावास में रहते हुए 1944 की दीपावली की रात पूज्य तनसिंह जी के हृदय में यह भाव जागृत हुआ कि मेरा समाज किस ओर जा रहा है, समाज का यह पतन कहां रुकेगा? उसी पीड़ा और उससे जगे चिंतन ने श्री क्षत्रिय युवक संघ को जन्म दिया जिसने 22 दिसंबर 1946 को वर्तमान स्वरूप में आकार ग्रहण किया। पूज्य तनसिंह जी राजनीति में भी रहे, व्यापार भी किया, अपने साथ सैकड़ों लोगों को भी व्यापार में लगाया, उन्होंने अनेक पुस्तकों का लेखन भी किया, गद्य और पद्य दोनों विधाओं में उन्होंने लिखा और उनका लेखन इतना गहरा है कि उसके समझने के लिए हमारा भाव भी उतना ही गहरा होना चाहिए। ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व तनसिंह जी का था लेकिन यह सब उनका बाहरी परिचय ही है। उनकी वास्तविक कृति तो श्री क्षत्रिय युवक संघ है और वही उनका वास्तविक परिचय भी है। संघ हमारे समाज में उन क्षत्रियोचित संस्कारों के निर्माण का कार्य कर रहा है, जिनके माध्यम से हम अपने खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। यह कार्य बहुत कठिन है लेकिन आप सभी के सहयोग से यह सरल बन सकता है। संघ का मुख्य कार्य व्यक्तित्व निर्माण का है जो बाल्यकाल में ही प्रारम्भ होता है क्योंकि इस अवस्था में ही संस्कारों के निर्माण के लिए आवश्यक लचीलापन बालक में उपलब्ध होता है। इसीलिए आप अपने बालक-बालिकाओं को संघ के शिविरों व शाखाओं में भेजकर इस कार्य में सहयोगी बनें, ऐसा आप सभी से निवेदन है। बाड़मेर शहर के राजपूत मोक्षधाम में स्थित पूज्य श्री तनसिंह जी की छतरी पर पुष्पांजलि का कार्यक्रम 7 दिसंबर 2021 को सुबह 5:30 बजे रखा गया जिसमें संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चुली शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। इस दौरान छतरी की सफाई की गई तथा पूज्य श्री की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित की बाड़मेर शहर प्रांत की आलोक आश्रम, मल्लीनाथ हॉस्टल, जय भवानी हॉस्टल, मोहन गुरुकुल हॉस्टल, मरुधर हॉस्टल की शाखाओं के स्वयंसेवक पूज्य श्री को श्रद्धांजलि देने पहुंचे। महाराष्ट्र सम्भाग के दक्षिण मुम्बई प्रान्त की तनेराज शाखा में पूज्य तनसिंह जी की पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें दक्षिण मुम्बई प्रान्त प्रमुख देवीसिंह झलोड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि याद उन्हीं को किया जाता है जिन्होंने समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। पूज्यश्री ने भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमारे समाज और राष्ट्र को ऐसा ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसके लिए आज हम सभी उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं। उत्तर मुम्बई प्रान्त की वीर दुर्गादास शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई। बाप क्षेत्र में श्री महेंद्र सिंह भाटी मेमोरियल छात्रावास के मैदान में भी पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके पुण्यतिथि मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक गणपत सिंह अवाय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पूज्य तनसिंह जी हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। संघ के 75 वर्ष पूरे होने पर मनाए जा रहे हीरक जयंती महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर हम अपने प्रेरक के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रकट करें। बीकानेर में शार्दुल राजपूत छात्रावास में, कोलायत में व अजमेर के केकड़ी में भी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित हुए। नागौर संभाग में आयुवान निकेतन (कुचामन सिटी) में पुण्यतिथि मनाई गई। जोधपुर शहर प्रान्त की हनवंत शाखा में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक बिशन सिंह खिरजा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। लूनी क्षेत्र की बैठक में पूज्य श्री की पुण्यथिति वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह माणकलाव की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण साझा करते हुए स्वयंसेवकों से कहा कि हम भाग्यवान हैं कि हमें पूज्य तनसिंह जी के बताए हुए मार्ग पर चलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस अवसर को चूकें नहीं बल्कि इसका पूरा लाभ उठा कर अपने जीवन को सार्थक करें। शेरगढ़ प्रान्त में बालेसर, सेखाला, शेरगढ़ व चामू में पूज्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई। पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़ ने समाजबंधुओं के साथ मिलकर पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। ओसियां क्षेत्र के तिंवरी में तथा भोपालगढ़ में भी पुण्यतिथि मनाई गई। पुणे में भी पूज्य श्री की पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें पवन सिंह बिखरणिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि पूज्य श्री ने क्षत्रिय युवक संघ के रूप में हमें एक अद्भुत मार्ग उपलब्ध कराया है इस मार्ग पर चलकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। मारवाड़ राजपूत सभा भवन में भी पुण्यतिथि मनाई गई जिसमें मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमान सिंह खांगटा सहित उनकी कार्यकारिणी ने पूज्य तनसिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की तथा हीरक जयंती के लिए बसों की व्यवस्था करने का जिम्मा लेकर कन्ट्रोल रूम स्थापित करने का निर्णय लिया गया।

हीरक जयंती की तैयारियों हेतु संघशक्ति में बैठकों का दौर

संघ शक्ति कार्यालय जयपुर में हीरक जयंती कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे समाज बंधुओं के साथ बैठकें आयोजित करके कार्ययोजना तैयार की जा रही है। इस क्रम में 01 दिसम्बर को शिक्षक वर्ग, छात्र नेता वर्ग व पार्षद गणों की अलग-अलग बैठकों का आयोजन किया गया। पार्षदों की बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य ईश्वरीय कार्य है और ईश्वर की कृपा से ही यह कार्य चल रहा है। इस कार्य में हम को माध्यम बनाया है यह हमारे लिए प्रसन्नता की बात है। मैं ऐसा अनुभव कर रहा हूं, देख रहा हूँ कि यह कार्य भगवान की इच्छा से हो रहा है और ईश्वर की इच्छा सफल ना हो इसका कोई कारण दिखाई नहीं देता। हीरक जयन्ती के लिए आप सभी के इस उत्साह को वरदान प्रदान करने वाला भी ईश्वर ही है। हम उन्हीं से प्रार्थना करें कि वह हमारे समाज का जिस प्रकार से इस बार मार्गदर्शन कर रहे हैं, भविष्य में भी उसी प्रकार मार्गदर्शन करते रहें। हमारे समाज की एकता अवश्य प्रदर्शित हो ताकि सारे संसार को साथ लेकर हम मानवता की सेवा कर सकें, धर्म की सेवा कर सकें, संस्कृति की सेवा कर सकें। जो हमारी संस्कृति लड़खड़ाती हुई संस्कृति है उसको बचा सकें, ऐसी हम भगवान से प्रार्थना करें तो निश्चित रूप से उनकी कृपा हमें प्राप्त होगी। 22 दिसंबर 1946 को, पिलानी में जब तन सिंह जी पढ़ते थे, तब दिवाली के दिन उन्होंने जो समाज के लिए स्वप्न देखा था वही हमारा भी स्वप्न बन गया है। इस स्वप्न को साकार करने का साधन हमारी एकता ही है। लेकिन हमारी इस एकता के प्रदर्शन से हमारे भीतर किसी भी प्रकार का अहंकार न आए, न हम किसी के उद्वेग का कारण बनें और ना ही हम स्वयं उद्विग्न हो। जिस प्रकार हम धैर्य के साथ कार्य कर रहे हैं उसी प्रकार हमारे कदम आगे बढ़ते रहें, भगवान से ऐसी प्रार्थना सदैव करते रहें। इसी प्रकार 27 नवंबर को चिकित्सक वर्ग की भी एक बैठक संघशक्ति में आयोजित की गई। बैठक में वरिष्ठ चिकित्सक सुमित राणावत, संजय सिंह शेखावत, केसरी सिंह आदि उपस्थित रहे। बैठक का संचालन श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के यशवर्धन सिंह झेरली ने किया। 02 दिसम्बर को समाज के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों की एक बैठक आयोजित की गई। जयपुर सम्भाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर ने 22 दिसम्बर को होने वाले हीरक जयंती कार्यक्रम की जानकारी दी। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय दिया व कहा कि यह पूरे समाज का कार्यक्रम है और हम सबकी सहभागिता और एकता ही इस कार्यक्रम को सफल बनाएगी। प्रेम सिंह बनवासा ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने हीरक जयन्ती कार्यक्रम में सहयोग देने की बात कही एवं जयपुर आने वाले समाजबंधुओं की मेजबानी का जिम्मा लिया। 06 दिसम्बर महाविद्यालयों में पढ़ रहे विद्यार्थी वर्ग की बैठक का आयोजन किया गया। सभी ने कार्यक्रम में सहयोग करने का संकल्प व्यक्त किया।

जयपुर शहर में रहने वाले समस्त स्वजातीय बंधुओं को आमंत्रित करने हेतु विभिन्न सामाजिक संस्थाओं व संगठनों की एक बैठक 7 दिसम्बर को भी आयोजित की गई जिसमें मुख्यतः जयपुर शहर और ग्रामीण की 46 संस्थाओं के प्रतिनिधि बैठक में सम्मिलित हुए। प्रेम सिंह बनवासा ने कार्यक्रम का संचालन किया। 08 दिसम्बर को विद्याधर विधानसभा से विक्रम सिंह मूंडरु ने स्थानीय सहयोगियों को संघशक्ति में आमंत्रित कर हीरक जयन्ती की तैयारियों में सहयोग हेतु आह्वान किया। इसी दिन अधिवक्ता सतेन्द्र सिंह लाखलान के सहयोग से लगभग 50 अधिवक्ताओं की बैठक का भी आयोजन हुआ। सभी ने 22 दिसम्बर को पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए कौम के मेले में बढ़-चढ़ कर सहयोग की बात कही। 10 दिसंबर को जयपुर में कार्यरत राजपूत पत्रकारों के साथ चर्चा हुई जिसमें वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र सिंह खाचरियावास, श्रीपाल सिंह शक्तावत, बिल्लु बन्ना, भवानी सिंह देवड़ा सहित 25 पत्रकार शामिल हुए एवं माननीय भगवान सिंह जी के सानिध्य में चर्चा की।

भारत के प्रथम सीडीएस जनरल बिपिन लक्ष्मण सिंह रावत का हेलीकॉप्टर दुर्घटना में निधन

8 दिसंबर को तमिलनाडु के कुन्नूर क्षेत्र में भारतीय सेना के एमआई-17 हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने से उसमें सवार भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन सिंह रावत, उनकी पत्नी मधुलिका सिंह सहित 13 सैनिकों व सेनानायकों की मृत्यु हो गई। जनरल रावत का जन्म उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले में रावत राजपूत परिवार में हुआ। जनरल रावत की माताजी परमार वंश से है। इनके पुर्वज हरिद्वार जिले के मायापुर से आकर गढवाल के परसई गांव मे बसने के कारण परसारा रावत

कहलाये। रावत एक सैन्य पदवी है जो गढ़वाल के राजपूतों को मिली थी। इनके पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत सेना से लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। रावत ने ग्यारहवीं गोरखा राइफल की पांचवी बटालियन से 1978 में अपने सैन्य जीवन का प्रारम्भ किया था। उन्होंने देहरादून में कैंबरीन हॉल स्कूल, शिमला में सेंट एडवर्ड स्कूल और भारतीय सैन्य अकादमी , देहरादून से शिक्षा प्राप्त की जहां उन्हें 'सोर्ड ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया। वह फोर्ट लीवनवर्थ, यूएसए में डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, वेलिंगटन और हायर कमांड कोर्स के स्नातक भी थे। 2011 में वे सैन्य-मीडिया सामरिक अध्ययनों पर अनुसंधान के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी से सम्मानित हुए। उन्हें अपनी असाधारण वीरता व सेवा के लिए सेना मेडल, युद्ध सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल व परम विशिष्ट सेवा मेडल से भी सम्मानित किया गया। दुर्घटना में शहीद होने वालों में उत्तरप्रदेश के आगरा जिले में सरन नगर के निवासी विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान भी शामिल है। 42 वर्षीय विंग कमांडर पृथ्वी सिंह चौहान सैनिक स?कूल रीवा से शिक्षा प्राप्त करने के बाद एनडीए में चयनित हो गए व सन 2000 में भारतीय वायुसेना में नियुक्त हुए। वर्तमान में वह विंग कमांडर के रूप में कोयम्बटूर के पास एयरफोर्स स्टेशन पर तैनात थे। वे हैदराबाद, गोरखपुर, गुवाहाटी, ऊधमसिंह नगर, जामनगर, अंडमान निकोबार सहित विभिन्न एयरफोर्स स्टेशन्स पर तैनात रहे। उन्हें एक वर्ष की विशेष ट्रेनिंग के लिए सूडान भी भेजा गया था। संपूर्ण राष्ट्र को शोक संतप्त कर देने वाली इस दुखद दुर्घटना पर माननीय प्रधानमंत्री, गृहमंत्री सहित सरकार और विपक्षी दलों के नेताओं ने दुख प्रकट करते हुए शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की।

संपादकीय

समाजसेवक या स्वयंसेवक

समाजसेवक और स्वयंसेवक इन दोनों शब्दों का विभिन्न संदर्भों में प्रयोग होते हुए हम नित्य देखते हैं। दोनों ही शब्दों का सामान्य अर्थ में प्रयोग सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के लिए किया जाता है। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की भांति श्री क्षत्रिय युवक संघ और उसके कार्यकर्ता भी समाज में ही कार्य करते हैं। इसलिए हमारे लिए और सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि हम कौन हैं - समाजसेवक या स्वयंसेवक? या यह प्रश्न इस प्रकार से भी पूछा जा सकता है कि हम क्या बनना चाहते हैं समाज सेवक या स्वयंसेवक? उपरोक्त दोनों प्रश्नों के उत्तर, उत्तर देने वाले व्यक्ति विशेष के व्यवहार और विचार के सापेक्ष होंगे इसलिए सामूहिक क्षेत्र में प्रश्न को व्यापकता प्रदान करने के लिए इस प्रकार पूछा जा सकता है कि हमें क्या बनना चाहिए - समाजसेवक या स्वयंसेवक? वास्तविक अर्थ में इस प्रश्न को हल करने के बाद ही हमें उपरोक्त दोनों प्रश्नों की ओर क्रमशः लौटना चाहिए क्योंकि तभी हमारे पास उन्हें हल करने के लिए आवश्यक सैद्धांतिक आधार आत्मचिंतन के लिए उपलब्ध होगा।

हमें क्या बनना चाहिए? इस प्रश्न के दोनों संभावित उत्तरों का हम विश्लेषण करें तो यथार्थ को समझना सरल होगा। पहला संभावित उत्तर है कि हमें समाजसेवक बनना चाहिए। सिद्धांत रूप में यह ठीक लगता है क्योंकि समाज की सेवा का कार्य निश्चय ही श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित प्रतीत होता है। अपनी संकुचितता और स्वार्थ को छोड़कर समाज की सेवा के महान कार्य में लगना भला क्यों श्लाघनीय नहीं होगा? लेकिन व्यावहारिक धरातल पर एक व्यक्ति जब समाज की सेवा प्रारंभ करता है तो सबसे पहली समस्या उसके सामने आती है अथवा आनी चाहिए कि समाज क्या है, उसका स्वरूप क्या है, उसका और हमारा संबंध क्या है और उसकी सेवा किस प्रकार की जाय? इन प्रश्नों के विस्तृत विश्लेषण की यहाँ आवश्यकता नहीं परंतु कोई भी इन प्रश्नों पर चिंतन करेगा तो यही पाएगा कि समाज अत्यंत विशाल है और इसके सामने व्यक्ति बहुत छोटा है। एक व्यक्ति के रूप में हम जीवन में कुछ सौ या हजार लोगों के संपर्क में आते हैं, उनमें से भी गिने-चुने व्यक्तियों के साथ हमारा घनिष्ट संबंध बनता है और उनके विचार, व्यवहार, आवश्यकताओं, समस्याओं आदि को भी हम कमोबेश ही जान पाते हैं, वह भी पूर्णतया नहीं। समाज की विशालता और जीवनकाल की तुलना में हमारी यह जीवन भर की उपलब्धि नगण्य ही है। विचार करें, इतने विशाल समाज के स्वभाव, आवश्यकताओं और समस्याओं को हम कैसे जान सकते हैं और जान भी लें तो उन आवश्यकताओं और समस्याओं का आकार कितना विशाल होगा और क्या उनका समाधान किसी एक व्यक्ति से हो सकेगा? इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि समाज की सेवा करना तो दूर समाज के स्वरूप को जानना और उसकी आवश्यकताओं को यथार्थ रूप में समझना भी सामान्य व्यक्ति के लिए दुष्कर है। अब आलोच्य प्रश्न के दूसरे संभावित उत्तर को टटोलते हैं और वह है कि हमें स्वयंसेवक बनना चाहिए। स्वयंसेवक बनने में भी पहली समस्या यही आएगी की जिस की सेवा करनी है वह कौन है, उसका स्वभाव क्या है, आवश्यकताएं और समस्याएं क्या है आदि। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से यह समस्या अति सरल सिद्ध होती है क्योंकि स्वयं को जानने, अपनी आवश्यकताओं को समझने व समस्याओं को पहचानने में भला क्या मुश्किल होगी। केवल अपनी ओर दृष्टि भर करनी है क्योंकि हमारा अस्तित्व ही एकमात्र वस्तु है जो पूर्णतया हमारी पहुंच में और हमारे लिए निकटतम है। आत्मचिंतन द्वारा यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अपने को जानकर अपने विकास की ओर बढ़ना ही अपनी सेवा है। इस दृष्टिकोण से स्वयंसेवक बनना समाजसेवक बनने की अपेक्षा कहीं अधिक सरल, व्यावहारिक और स्वाभाविक विकल्प है।

लेकिन उपरोक्त सैद्धांतिक विवेचना तो केवल विकल्प के चुनाव के लिए तर्कपूर्ण बौद्धिक आधार तैयार करती है। इस विकल्प का चुनाव करने के बाद जब व्यक्ति अपने आप को जानने के मार्ग पर बढ़ता है, अपने विकास के लिए कर्मरत होता है तब उसके अनुभव उन तर्कों से कहीं अधिक गहराई से यह सिद्ध करते हैं कि यही सही मार्ग है। स्वयंसेवक बनकर ही यह रहस्य भी स्पष्ट होता है कि समाज कितना भी विशाल क्यों ना हो, बना उसी के जैसे व्यक्तियों से ही है और इसीलिए समाज की आवश्यकताएं और समस्याएं उसकी आवश्यकता और समस्याओं से भिन्न नहीं हो सकती। अपने सर्वांगीण विकास के लिए साधनारत स्वयंसेवक स्पष्टतया यह अनुभव कर सकता है कि जितने अंश में उसने अपना विकास किया है उतने ही अंशों में समाज का भी विकास हुआ है क्योंकि वह भी इसी समाज का अभिन्न अंग है। जो ब्रह्मांड में है वही पिंड में है इस सिद्धांत के अनुसार जब तक हम अपने भीतर उतरकर अपने अस्तित्व के स्वरूप और कारण की खोज नहीं करते तब तक हम समाज को भी जान नहीं सकते और हम समाज की या किसी अन्य की सेवा करने का कितना ही दम भर लें वास्तव में वह हवा में लट्ठ मारने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। समाज की सच्ची सेवा का अर्थ भी तभी स्पष्ट होता है। एक व्यक्ति के रूप में हमारे लिए समाजसेवा का सच्चा स्वरूप स्वयंसेवक बनना ही है। इसके इतर कोई मार्ग ढूंढ कर यदि कोई समाज की सेवा करने का दावा करता है तो संभावना यही है कि उस दावे के मूल में स्वयं को न जानने का अज्ञान और उस अज्ञान से उत्पन्न अहंकार ही है और कुछ नहीं। समाज की सेवा वास्तव में समाज की आवश्यकता पूर्ति के लिए नहीं बल्कि समाज की विशालता में अंतर्निहित दिव्यता और हमारे अस्तित्व के लिए उस की अनिवार्यता का अनुभव करके कृतज्ञता के रूप में की जाती है। इसीलिए एक स्वयंसेवक कभी भी यह दावा नहीं करता कि वह समाज की सेवा करता है बल्कि वह तो केवल समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए जो कुछ उसके पास है, उसको समाज के चरणों में अर्पण करने का भाव रखकर कृतकृत्य होता है। दूसरी ओर समाजसेवक होने का जिनका दावा होता है अधिकांशतः वह दावा उनके विशुद्ध अहंकार का ही होता है। उस अहंकार की पुष्टि के लिए ही वे समाज की सेवा करने के लिए विभिन्न उपक्रम भी करते हैं लेकिन उसे उपास्य मानकर नहीं बल्कि उस पर एहसान करने के प्रच्छन्न भाव के साथ। लेकिन उनका यह क्षुद्र अहंकार समाज की दिव्यता के सामने कभी भी टिक नहीं पाता इसलिए ऐसे तथाकथित समाजसेवी अक्सर ऐसे भाव प्रकट करते हुए मिल जाएंगे कि यह समाज तो नाकारा है, इसका कुछ नहीं हो सकता। इसको सुधारने के लिए ऐसा होना चाहिए, वैसा करना चाहिए जैसे ईश्वर ने उनको इस समाज का उद्धार करने के लिए इस धरती पर अवतरित किया है। अंततः ऐसा तथाकथित उद्धारक मात्र नुक्ताचीनी करने वाले बनकर रह जाते हैं जो स्वयं कुछ सार्थक नहीं कर पाते बल्कि समाज जागरण के क्षेत्र में कार्य करने वाले अन्य लोगों पर टीका-टिप्पणी करने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। किसी भी व्यक्ति के सामाजिक भाव की ऐसी परिणति दुखद है इसलिए हम सदैव सावधान रहें कि हम कहीं समाजसेवक होने की गलतफहमी न पाल लें बल्कि स्वयंसेवक बनकर अपने जीवनपुष्प को भक्तिभाव से समाज के चरणों में अर्पित करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए समाजसेवक नहीं स्वयंसेवक का निर्माण करता है और स्वयंसेवक निर्माण की इस प्रक्रिया को सामूहिक स्वरूप प्रदान करता है क्योंकि वह भली भांति जानता है कि समाज सेवा कोई प्रक्रिया नहीं बल्कि स्वयंसेवा की प्रक्रिया का स्वाभाविक और निश्चित परिणाम है। इसलिए आएं, हम भी इस प्रक्रिया में अपने को अर्पित करके स्वयंसेवक बनने की राह पर चलें और समाज के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट कर-के कृतकृत्य हों।

वागड़ क्षत्रिय महासभा के साबला एवं आसपुर मंडल की संयुक्त बैठक संपन्न

वागड़ क्षत्रिय महासभा के साबला एवं आसपुर मंडल की संयुक्त बैठक चौहान कॉम्पलेक्स साबला में 5 दिसंबर को आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता ईश्वर सिंह जोगीवाड़ा ने की तथा मुख्य अतिथि गुमान सिंह वालाई रहे। मंडल साबला एवं आसपुर की संयुक्त शीतकालीन खेलकूद प्रतियोगिता जोगीवाड़ा में 28 एवं 29 दिसम्बर को आयोजित की जाएगी। बैठक के दौरान प्रतियोगिता के सफल आयोजन के लिए विभिन्न कमेटियों का गठन कर दायित्व सौंपे गए। साथ ही 22 दिसम्बर को जयपुर में होने वाले श्री क्षत्रिय युवक संघ के हीरक जयंती समारोह में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने पर भी चर्चा की गई। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि लक्ष्मण सिंह करेलिया, लक्ष्मण सिंह सामरिया ओडा एवं बलवन्त सिंह वालाई समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे।

पार्थराज सिंह शक्तावत (गेहूँवाड़ा) GGTU के सर्वश्रेष्ठ वालीबॉल खिलाड़ी घोषित

डूँगरपुर जिले के गेहूँवाड़ा निवासी वालीबॉल खिलाड़ी पार्थराजसिंह शक्तावत पुत्र श्री नारायण सिंह शक्तावत बांसवाडा के कलिंजरा में आयोजित गोविंदगुरु जनजाति विश्वविद्यालय की अन्तरमहाविद्यालयी वालीबॉल प्रतियोगिता में गुरुकुल कॉलेज का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए। इसके लिए उन्हें नकद पुरस्कार एवं ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में पार्थराज के श्रेष्ठ प्रदर्शन के कारण उनका GGTU बांसवाडा की टीम में चयन भी किया गया है। वे आगामी दिनों में जबलपुर (मध्यप्रदेश) में आयोजित होने वाली वेस्टजॉन यूनिवर्सिटी टूनार्मेंट में यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधित्व करेंगे।

हीरक जयंती समारोह हेतु तैयारी व संपर्क बैठकों की शृंखला

प्रतापगढ़

(पेज एक से लगातार)

दिल्ली के वीर कुंवर सिंह भवन, नांगलोई में भी इसी दिन एक बैठक का आयोजन हुआ। इसी प्रकार जोधपुर शहर में सरदार छात्रावास तथा चौपासनी में बैठक संपन्न हुई। जोधपुर के जय भवानी नगर में मातृशक्ति की बैठक भी आयोजित हुई तथा शेरगढ़ प्रांत की बैठक भी इसी दिन संपन्न हुई। उत्तर मुंबई प्रांत के भायंदर व मलाड में भी जयंती की तैयारियों हेतु कार्यक्रम रखे गए व समाज बंधुओ को घर घर जाकर आमंत्रित किया गया। बालोतरा शहर में भी हीरक जयंती को लेकर जनसंपर्क किया गया। गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के स्वयंसेवकों की बैठक गायत्री स्टोन, भावनगर में संपन्न हुई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची तथा गोहिलवाड़ राजपूत समाज के प्रमुख वासुदेव सिंह वरतेज सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पांची ने सभी को हीरक जयन्ती समारोह की जानकारी प्रदान करके जयपुर पहुंचने का निवेदन किया। प्रतापगढ़ प्रांत की बैठक श्री अंबिका बाणेश्वरी राजपूत छात्रावास में रखी गई जिसमें संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि हीरक जयन्ती महोत्सव 75 वर्षों से संघ द्वारा किये जा रहे संस्कार निर्माण के कार्य से समाज में जागे अनुशासन और एकता के भाव के प्रकटीकरण का अवसर है। डूंगरपुर प्रांत की बैठक श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास में संपन्न हुई जिसमें जिले की विभिन्न राजपूत संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने संबोधित किया व सभी से जयपुर पहुंचने का आग्रह किया। सिरोही प्रांत की बैठक राव सुरताण शिक्षण संस्थान (राजपूत छात्रावास) सिरोही में रखी गई जिसमें रेवदर, शिवगंज, पिंडवाड़ा, सिरोही आदि क्षेत्रों के समाज बंधु सम्मिलित हुए। प्रांत प्रमुख ईश्वर सिंह सरणकाखेड़ा सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। उत्तर मुम्बई प्रान्त की मालाड शाखा द्वारा हीरक जयंती समारोह के उपलक्ष में बैठक वाघेश्वरी मंदिर मलाड़ ईस्ट में रखी गई। संभागप्रमुख नीरसिंह सिंघाणा व प्रांतप्रमुख रणजीत सिंह आलासन स्वयंसेवकों सहित उपस्थित रहे। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के लाडनूं मंडल में राजपूत समाज की मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें लाडनूं तहसील को पांच भागों में बांट कर पांच टीमें गठित की गई एवं प्रचार प्रसार हेतु दायित्व सौंपे गए।

29 नवंबर को दिल्ली एनसीआर प्रांत में पुरानी दिल्ली मंडल के शास्त्री नगर में नारायण शाखा मैदान में हीरक जयन्ती के निमित्त संपर्क बैठक का आयोजन हुआ जिसमें शाखा के स्वयंसेवकों व शास्त्री नगर में रहने वाले प्रवासी बंधुओं ने भाग लिया। कुचामन स्थित आयुवान निकेतन में भी एक बैठक आयोजित हुई जिसमें हीरक जयंती हेतु कार्ययोजना पर चर्चा की गई। झालावाड़ और बारां में भी जयंती समारोह की तैयारी हेतु बैठक आयोजित हुई। जोधपुर में डिगाडी मैदान में बैठक का आयोजन हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख भरत पाल सिंह दासपा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जालौर में भाद्राजून गढ़ में तैयारी हेतु बैठक आयोजित हुई जिसमें करण सिंह भाद्राजून ने सभी से हीरक जयंती समारोह में पहुंचने का आह्वान किया। जालौर में आहोर के बाला में व सराणा स्थित सोमनाथ महादेव मंदिर में भी बैठकों का आयोजन हुआ जिनमें गणपत सिंह भँवरानी सहयोगियों सहित सम्मिलित हुए। बायतु प्रांत में गिड़ा व चिड़िया मंडल के मलवा, उतरती, जाजवा व चिड़िया गांवों में संपर्क बैठकें आयोजित हुई। बैठक के पश्चात चिड़िया में बाइक रैली भी निकाली गई।

30 नवंबर को नागौर में अमर राजपूत छात्रावास में बैठक का आयोजन हुआ जिसमें हीरक जयंती समारोह के लिए नागौर शहर और आसपास के गांवों में संपर्क हेतु टीमों का गठन किया गया। नागौर में मातृशक्ति की बैठक भी श्री राजपूत कॉलोनी में आयोजित हुई जिसमें संभाग प्रमुख शिंभू सिंह आसरवा उपस्थित रहे। इस दौरान हीरक जयन्ती कार्यक्रम में नागौर से अधिकाधिक संख्या में मातृशक्ति की सहभागिता पर चर्चा की गई। चुरू जिले के तारानगर क्षेत्र के तोगावास गांव में भी बैठक सम्पन्न हुई जिसमें ग्रामवासियों ने हीरक जयंती की तैयारियों हेतु एक कोर कमेटी का गठन किया। गुजरात में भाल प्रांत के पांची व संधिड़ा गांव में भी संपर्क बैठकों का आयोजन हुआ। बायतु प्रांत में हीरक जयंती समारोह को लेकर प्रांत प्रमुख मूल सिंह चांदेसरा व सहयोगियों द्वारा बाइक संदेश यात्रा दल के रूप में बायतु व चिड़िया मंडल के चांदेसरा, पुराना गांव बायतु, अकदड़ा, कानोड़, पूनियों का तला व सवाऊ आदि गांवों में संपर्क किया गया। नागौर संभाग के लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत के डीडवाना मंडल में हीरक जयंती समारोह के लिए पीले चावल बांटकर क्षेत्र के गांवों में संपर्क किया गया एवं ग्राम स्तर पर टीमें गठित की गई।

1 दिसंबर को नागौर संभाग में लाडनूं व डीडवाना मंडल के लगभग 20 गांवों में जनसंपर्क किया गया। इसके लिए दो टीमों का गठन किया गया। जालौर संभाग में सांचौर प्रांत में अचलपुर, सुथाना, दांतियाँ, बावरला, डडूसन, डभाल, पहाड़पुरा, बिछावाड़ी आदि गांवों में संपर्क अभियान चलाकर पीले चावल बांट कर हीरक जयंती समारोह में आने का न्योता दिया गया। 2 दिसंबर को हीरक जयंती समारोह के प्रचार-प्रसार हेतु जोबनेर मण्डल के जोबनेर, ढीण्ढा, चान्दसिंहपुरा, माल्यावास, पीपली का बास, रेनवाल, रामजीपुरा कलां, रामजीपुरा खुर्द, भोजपुरा गांवों में सम्पर्क किया गया। जयपुर में संभाग के स्वयंसेवकों की बैठक भी आयोजित हुई जिसमें हीरक जयन्ती संदेश यात्रा के जयपुर में स्वागत की रूपरेखा तय की गई। जयपुर के खातीपुरा स्थित जसवंत नगर, चांद बिहारी नगर, सुंदर नगर आदि कई क्षेत्रो में जन सम्पर्क किया गया। (शेष पृष्ठ 6 पर)

जामनगर

उदयपुर

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

'संघशक्ति' में हीरक जयंती संदेश यात्रा का भव्य स्वागत

(पेज एक का शेष)

आप सभी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की ओर से जो यह यात्रा पूर्ण की है, यह भी एक तीर्थ यात्रा ही है। जिस प्रकार तीर्थ यात्रा के पुण्य से हमारे जीवन में परिवर्तन आता है उसी प्रकार यह यात्रा भी आपके जीवन को श्रेष्ठता की ओर बढ़ाएगी, ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। हीरक जयंती में बहुत कम समय रह गया है, इसीलिए हमें पूर्ण मनोयोग से उसकी तैयारियों में लग जाना है। बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, चूरू, झुंझुनू, सीकर व जयपुर जिलों में लगभग 250 गांवों से गुजरने वाली संदेश यात्रा ने 3 दिसंबर को किशनगढ़ रेनवाल से जयपुर में प्रवेश किया। यहां से जोबनेर, चिरनोटिया, प्रतापपुरा, हिंगोनिया, बैण्याकाबास, लालपुरा, पचार कालवाड, माचवा, हाथोज, गोविंदपुरा, करधनी, बजरंग द्वारा, कांटा चौराहा, गणेश मंदिर, खिरनी फाटक ब्रिज, सिरसी रोड, खातीपुरा ब्रिज मोड, जसवंतनगर, चांद बिहारी नगर, खातीपुरा रोड, शिल्प कॉलोनी, ब्रिजपाल स्कूल चौराहा, शिवपुरी, ताऊ सर्किल और वृंदावन कॉलोनी से होते हुए संघशक्ति भवन पहुंची। यात्रा में सम्मिलित महेंद्र सिंह तारातरा व उनके सहयोगियों ने संघशक्ति में पूज्य श्री तन सिंह जी की मूर्ति को प्रणाम करके अपनी यात्रा का समापन किया।

इससे पूर्व चरकड़ा में रात्रि विश्राम के पश्चात 28 नवम्बर को नोखा गांव, भोमटसर, सिंजगुरु, मोरखाणा, किरतासर, सोवा, गजरूपदेसर फांटा, किलचु, सुरघणा, देशनोक गांवों की यात्रा करते हुए संदेश यात्रा का कारवां

बीकानेर पहुंचा। बीकानेर में सैंकड़ों स्थानीय लोग अपने अपने वाहनों सहित यात्रा में शामिल हुए व पूरे मार्ग में हर चौराहे पर विभिन्न संगठनों व समाजों द्वारा पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया। यहाँ संघ कार्यालय नारायण निकेतन में भी यात्रा का स्वागत किया गया। यहां से सेरूणा, झंझेऊ, जोधासर, लखासर, श्री डूंगरगढ़ होते हुए पुंदलसर पहुंचकर रात्रि विश्राम किया। 29 नवंबर को हीरक जयंती संदेश यात्रा पुंदलसर से रवाना होकर धर्माज, नोसरिया, बरजांगसर होते हुए लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में पहुंची यहां से सोनियासर, रेड़ा, साजनसर, तेहनदेसर, ईंयारा, बंबु, सांडवा, बीदासर एवं ढढेरू में से होते हुए चूरू प्रांत में प्रविष्ट हुई। रेड़ा में यात्री तृतीय संघप्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी रेड़ा के आवास के दर्शन कर कृतार्थ हुए। बीदासर प्रांत प्रमुख विक्रम सिंह ढींगसरी ने सहयोगियों के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया। यहां से आलसर, परसनेऊ, राजलदेसर, भरपालसर, पायली, रतनगढ़, लुंछ, सांगासर, भींचरी, कुसुमदेसर, फ्रांसा, छाबड़ी खारी, कादिया, ठठावता तथा बिरमसर होते हुए रोलसाहबसर पहुंची। रोलसाहबसर में माननीय संरक्षक महोदय के जन्मस्थान के दर्शन किए एवं उनके बड़े भ्राता से आशीर्वाद लिया। सभी स्थानों पर समाजबंधुओं द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया तथा बैठकें आयोजित करके हीरक जयंती कार्यक्रम हेतु कार्य योजना बनाई गई। हीरक जयंती संदेश यात्रा अपने नौवें दिन 30 नवंबर को प्रातः रोलसाहबसर से रवाना होकर फतेहपुर, गारिंडा, छिंछास, लक्ष्मणगढ़, दिसनाउ, मुकुंदगढ़, चूड़ी, दीनवा, मंडावा, मोजास, टोडरवास, कोल्याली, पाटोदा, टाई, गांगियासर, निराधनु, डाबड़ी, मंड्रेला व झेरली गांवों में होते हुए पिलानी पहुंची और उस स्थान के दर्शन किए जहाँ पूज्य तनसिंह जी के मन में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना का संकल्प जगा था। 1 दिसंबर को पिलानी से यज्ञ के

पश्चात रवाना हुई यह यात्रा खुडानिया, आलमपुरा, इस्माइलपुर, चिड़ावा, सुल्ताना, कालीपहाड़ी, जयपहाड़ी, बगड़ होते हुए झुंझुनू पहुंची। यहां से घोड़ीवारा, नवलगढ़, झाझड, गोठड़ा, बसावा, बाववा, चैनगढ़, मोहनवाड़ी, खिरोंड, तारपुरा, सिंघासन, पिपराली होते हुए सीकर पहुंची।

सीकर में सैंकड़ों लोगों ने यात्रा का स्वागत किया व जगह जगह पुष्पवर्षा की गई। यहां से दूजोद होकर संदेश यात्रा नाथावतपुरा पहुंची जहां दुर्गा महिला संस्थान की बालिकाओं द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। ग्यारहवें दिन 2 दिसंबर को सीकर से रवाना होकर परडोली, खाखोली, सेवा, सेवद, टाटनवां, बिंजासी, अनोखू, जस्सूपुरा, सुजानपुरा, शाहपुरा होते हुए लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में डीडवाना मंडल क्षेत्र में पहुंची जहां स्थान-स्थान पर ग्रामीणों द्वारा स्वागत किया गया। नागौर में संदेश यात्रा का प्रवेश दयालपुरा से हुआ, जहां से ललासरी होते हुए यात्रा डीडवाना पहुंची। यहां विभिन्न समुदाय के लोगों द्वारा स्वागत किया गया। यहां से राजपूत सभा भवन में अपराह्न भोजन के पश्चात संदेश यात्रा बरागंना, सिंगरावट, बरड़वा, खोजास, गांवडी, तोषिणा, आसरवा, नगवाडा, लोरोली, मनाना, कालवा, चावण्डिया, जाखली, जूसरी, बरवाली, बुडसु, बरवाला, रुपपुरा होती हुई कुचामनसिटी पहुंची जहाँ संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में रात्रि विश्राम किया। कुचामन से दीपपुरा, चितावा, दौलतपुरा, सामी आदि गांवों से होते हुए द्वितीय संघप्रमुख पूज्य आयुवानसिंह जी के गांव हुडील पहुंचे और उस पवित्र स्थान के दर्शन कर कृतार्थ हुए। यहां से रामगढ़, खाचरियावास, करड़ होते हुए जयपुर जिले में प्रविष्ट हुए। यहां वर्तमान संघप्रमुख माननीय लक्ष्मण सिंह जी की जन्मभूमि बैण्यांकाबास जाकर उस भूमि को भी नमन किया। पूरी यात्रा के दौरान विभिन्न गांवों में ग्रामवासियों द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। ग्रामवासियों ने पूज्य श्री तन सिंह जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके उनके प्रति श्रद्धा प्रकट की। विभिन्न स्थानों पर बैठकें आयोजित करके यात्रा में शामिल स्वयंसेवकों ने ग्रामवासियों को हीरक जयंती कार्यक्रम व श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में जानकारी प्रदान की और उन्हें जयपुर आने का निमंत्रण दिया।

हीरक जयंती समारोह...

(पेज पांच से लगातार)

शहर प्रान्त प्रमुख सुधीर सिंह ठाकरियावास व सहयोगियों द्वारा झोटवाड़ा क्षेत्र में भी सघन जनसंपर्क किया गया। हीरक जयंती समारोह के लिए चूरू की जिला स्तरीय कार्य योजना बैठक का आयोजन राजेंद्र सिंह राठौड़, नेता प्रतिपक्ष, राजस्थान विधानसभा के चूरू स्थित आवास पर आयोजित की गई। बैठक को संबोधित करते हुए राजेन्द्र राठौड़ ने कहा कि संघ ने 75 वर्ष की अपनी यात्रा में समाज में संस्कार और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में जो काम किया है, वह स्तुत्य है। निस्वार्थ भाव से त्याग और बलिदान की परंपरा, जो हमारे पूर्वजों ने कायम की थी, उस को आगे बढ़ाने का कार्य संघ कर रहा है। संगठित होकर ही हम समाज और राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। इस दौरान जिला स्तरीय संयोजन टीम व राजगढ़, तारानगर, सरदारशहर, रतनगढ़ और चूरू के तहसील स्तरीय दलों का गठन किया गया। चूरू जिले से 10 हजार की संख्या में समारोह में शामिल होने की योजना तय की गई। जोधपुर संभाग में डिगाडी व केतु में केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा की उपस्थिति बैठक सम्पन्न हुई। रणधा ने हीरक जयन्ती समारोह को समाज के लिए ऐतिहासिक अवसर बताते हुए सभी से सक्रिय सहयोग का आह्वान किया। शेरगढ़ में प्रान्त प्रमुख भेरू सिंह बेलवा की उपस्थित में बैठक सम्पन्न हुई। केतु व शेरगढ़ में शेरगढ़ विधायक मीना कंवर भी उपस्थित रही। सांचौर रानीवाड़ा प्रान्त प्रमुख महेन्द्र सिंह कारोला ने सहयोगियों के साथ हरियाली, डांगरा, चौरा, बिजरोल, मूली, निम्बाऊ, देवड़ा गाँवो में बैठक कर समाजबंधुओं को हीरक जयंती समारोह में आने का निमंत्रण दिया। 3 दिसंबर को दौसा के रॉयल पैलेस होटल में माननीय संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्यांकाबास के सानिध्य में बैठक का आयोजन किया गया। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि समाज को एकता के सूत्र में बांधने के लिए दीर्घकालीन साधना की आवश्यकता होती है। संघ उसी साधना

में जुटा हुआ है। इस साधना के 75 वर्ष पूरे होने पर सामाजिक एकता के भव्य स्वरूप का प्रकटीकरण जयपुर में होने जा रहा है, जिसमें हम सभी को उपस्थित रहकर सामाजिक एकता को सुदृढ़ करना है। अलवर शहर में समाज के प्रबुद्धजनों की बैठक आयोजित हुई जिसमें हीरक जयन्ती में अधिकाधिक संख्या जुटाने के लिए कार्ययोजना बनाई गई। साथ ही अलवर जिले के स्वयंसवेकों ने मुंडावर तहसील के राजपूत बाहुल्य गांवों शामदा, छापुर, पदमाड़ा कल्ला, भीवाड़ा में संपर्क किया और समाजबंधुओं को 22 दिसंबर को जयपुर आने का निमंत्रण दिया। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में डीडवाना मंडल में सिंघाना, पाटन, आजवा, ठाकरियावास, दुदौली, चौमू, डडेल, भण्डारी, मामडौदा, केराप, चक, खारड़िया आदि गांवों में संपर्क करके ग्राम स्तरीय दलों का गठन किया गया जिन्हें 22 दिसंबर को समाजबंधुओं को साथ लेकर जयपुर पहुंचने का दायित्व सौंपा गया। इसी प्रकार लाडनूं मंडल में दूजार, बाकलिया, बादेड़, बेड़, सांवराद, छप्पारा, धूड़ीला, खामियाद, नंदवाण, रताऊ, कोयल आदि गांवों में भी संपर्क करके दलों का गठन किया गया। भीलवाड़ा प्रान्त में व अजमेर के केकड़ी में भी कोहड़ा, गुलगाव व सदारी गांवों में हीरक जयन्ती हेतु संपर्क किया गया। बायतु प्रान्त के गिड़ा मंडल के लापुदड़ा गांव स्थित राजकीय विद्यालय के प्रांगण में बैठक का आयोजन हुआ। 4 दिसंबर को पूर्वी राजस्थान संभाग के दौसा प्रान्त के अंतर्गत करौली जिले के नादौती स्थित रामलला मंदिर में नादौती राजपूत समाज की बैठक 4 दिसंबर को आयोजित हुई। दौसा प्रांत के सवाई माधोपुर जिले के छावा गांव स्थित भोमिया जी मंदिर में भी इसी दिन बैठक संपन्न हुई। दोनों पूर्वी राजस्थान संभाग में ही 4 दिसम्बर को अलवर जिले की टीम द्वारा हीरक जयंती के प्रचार प्रसार के लिए नीमराना, मुंडावर तहसील के बर्डोद, कोलीला आदि गांवों में संपर्क किया गया। जोधपुर के भोपालगढ़ में तैयारी बैठक केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई जिसमें क्षेत्र में जयन्ती की तैयारियों पर चर्चा की गई। जोधपुर के लक्ष्मण नगर में आयोजित बैठक में उम्मेद सिंह सेतरावा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

हीरक जयंती समारोह...

(पेज 6 से लगातार)

नागौर में जायल के श्री राजपूत सभा भवन में भी हीरक जयंती की तैयारी हेतु बैठक का आयोजन हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बाड़मेर संभाग में गडरा रोड प्रांत के तिबानियार, जानसिंह की बेरी, फोगेरा, दुधोड़ा, ताणु रावजी, हरसाणी, गोरडिया, मगरा, तुड़बी, उगेरी, गिराब आदि गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाया गया, इस दौरान वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह मुंगेरिया ने सहयोगियों के साथ मिलकर सभी ग्राम वासियों को हीरक जयंती समारोह में आने का न्योता दिया। धोद विधानसभा की बैठक 4 दिसंबर को सीकर स्थित श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान के प्रांगण में आयोजित हुई। इस दौरान विधानसभा क्षेत्र में हीरक जयंती के प्रचार प्रसार हेतु चार टीमों का गठन किया गया। राजपूत छात्रावास, पादरु में पादरु मण्डल के समाज बंधुओं की बैठक संभाग प्रमुख मूल सिंह काठाड़ी के सानिध्य में आयोजित हुई जिसमें हीरक जयंती समारोह के लिए पादरु से दो बसें तय की गई व घर-घर प्रचार प्रसार करने की योजना बनाई गई। बायतू प्रांत के नोसर मंडल के नोसर, सणपा, सेवनियाला व सोमेसरा में हीरक जयंती समारोह हेतु पीले चावल देकर ग्रामवासियों को आमंत्रित किया गया। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में डीडवाना मंडल में भी बुडौद, आगुंता, लोरोली, सागुबड़ी, रणसीसर जोधा, बांठड़ी, छोटी खाटू, कोनियाड़ा, खुड़ी, भवाद, कुडौली, मंडूकरा, पीड़वा, बगतपुरा, सानिया आदि गांवों में संपर्क करके ग्राम स्तरीय दलों का गठन कर दायित्व सौंपे गए। बीकानेर संभाग में संभागप्रमुख रेवंत सिंह जाखासर के नेतृत्व में एक संपर्क दल द्वारा बेलासर, रायसर, पनपालसर, गुसाईसर, पेमासर, उदासर गांवों में जनसंपर्क सभाओं का आयोजन किया गया व समाजबंधुओं को अधिक से अधिक संख्या में हीरक जयंती समारोह जयपुर में सहभागी बनने का निवेदन किया गया।

5 दिसंबर को अजमेर के राजपूत छात्रावास में आयोजित शहीद स्वर्गीय मेजर शैतान सिंह जी भाटी की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में हीरक जयंती कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन किया गया व उपस्थित समाजबंधुओं को हीरक जयन्ती कार्यक्रम में पहुंचने का निमंत्रण दिया गया। इस दौरान कांग्रेस के वरिष्ठ नेता धर्मेंद्र राठौड़, आरपीएससी अजमेर के चेयरमैन शिव सिंह राठौड़, महेंद्र सिंह रलावता, राधेश्याम तंवर और आईपीएस भंवर सिंह सहित अनेकों गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। कच्छ काठियावाड़ गुजरात गरासिया एसोसिएशन के द्वारा भी हीरक जयंती के निमित्त कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें सैकड़ों की संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम में एसोसिएशन के प्रमुख ध्रुवकुमार सिंह, प्रवीणसिंह शोलिया, गुजरात सरकार में कैबिनेट मंत्री किरीटसिंह राणा, शक्तिसिंह कोटडा नायानी, राजकोट स्टेट के मांधाता सिंह, वरिष्ठ स्वयंसेवक बलवंतसिंह पांची और संघ के केंद्रीय कार्यकारी महेंद्रसिंह पांची सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। सौराष्ट्र कच्छ संभाग में जामनगर प्रांत में जामनगर जिला राजपूत क्षत्रिय समाज के सहयोग से हीरक जयंती के निमित्त 5 दिसंबर को तीन कार्यक्रम आयोजित हुए। पहला कार्यक्रम कुमार छात्रावास में और अन्य दो कार्यक्रम कन्या छात्रालय में सम्पन्न हुए। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्रसिंह पांची सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। भूचर मोरी मैदान में भी गुजरात युवा राजपूत संघ द्वारा हीरक जयन्ती हेतु बैठक रखी गई। जोधपुर संभाग के ओसियां में तैयारी बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायण सिंह माणकलाव व संभाग प्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। चामू मंडल की बैठक वरिष्ठ स्वयंसेवक हरि सिंह ढेलाणा की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। नागौर संभाग में मेड़ता, डेगाना, रिया और भैरुंदा पंचायत समिति की हीरक जयंती हेतु प्रतिनिधि बैठक श्री चारभुजा छात्रावास मेड़ता में आयोजित हुई। 7 दिसंबर को दौसा प्रांत में करौली में हीरक जयंती की तैयारियों हेतु बैठक आयोजित हुई। नीमकाथाना के श्री राजपूत प्रताप छात्रावास में हीरक जयंती की तैयारी हेतु बैठक का आयोजन किया गया, शेरगढ़ प्रान्त के बालेसर, सेखाला, शेरगढ़ व चामू मंडल के स्वयंसेवकों व सहयोगियों की बैठक बाड़ी का थान, बालेसर में संपन्न हुई। पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़ बैठक में उपस्थित रहे। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में डीडवाना मंडल में निम्बी कला, कुड़ली, डिकावा, बरांगना, सिंगरावट कलां, जेवलियाबास, सिंगरावट खूर्द, गोदरास, रामसिंहपुर, कोलिया, प्यावा आदि गांवों में संपर्क करके हर गांव की टीम बनाई गई। इसी प्रकार

दौसा

बीदासर मण्डल के 15 गाँव - घंटियाल, पालश, सारंगसर, लुहारा, साण्डवा, बम्बू, तेहनदेसर, रेडा, कातर, कान्दलसर, बाडसर, लालगढ़, जोगलसर, नोडिया में समाजबंधुओं से सम्पर्क किया गया। श्री कोलायत जी की राजपूत धर्मशाला में कोलायत तहसील के समाजबंधुओं की बैठक आयोजित हुई। भदेसर तहसील क्षेत्र की तैयारी एवं समीक्षा बैठक आसावरा माताजी स्थित 'भवानी क्षत्रिय धर्मशाला' में संपन्न हुई। बीकानेर संभाग के श्री डुंगरगढ़ प्रांत में पूर्व प्रधान छेलूसिंह शेखावत व सहयोगियों द्वारा सम्पर्क यात्रा आयोजित हुई जिसमें गुसाइसर, इंडपालसर बास हिरावतान, इंडपालसर बड़ा, धर्मास, मिंग्सरिया, नोसरिया, बाडेला, बरजांगसर में संपर्क किया गया। बस्सी तहसील की बैठक केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। सरदारशहर (चुरू) क्षेत्र के डालमाण, फोगा, जोरावर पुरा , मेलुसर, नैणासर गांवों में कर्नल शिशुपाल सिंह पंवार (सेवानिवृत) जैतासर व सहयोगियों द्वारा संपर्क किया गया। महाराष्ट्र संभाग के पुणे प्रांत के पिंपरी-चिंचवड मंडल की बैठक राजस्थान राजपूत समाज संस्था दुर्गा माता मंदिर निगडी में आयोजित की गई। 8 दिसंबर को सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ विधानसभा के सक्रिय कार्यकताओं की बैठक लक्ष्मी पैलेस होटल लक्ष्मणगढ़ में आयोजित की गई जिसमें राजपूत सभा के अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राजास ने गांव का रूट चार्ट बनाकर 14 दिसंबर से संपर्क अभियान चलाने की बात कही। दौसा प्रांत के धौलपुर जिले में स्थित राजपूत छात्रावास में भी बैठक का आयोजन हुआ। अजमेर के परबतपुरा स्थित अंबे श्री कॉलोनी, विज्ञान नगर व केकड़ी शहर में भी संपर्क अभियान चलाया गया। खरेड़ा, विशाला व बापिणी में भी बैठक का आयोजन हुआ। कोटा के गोविंद नगर में भी बैठक का आयोजन हुआ जिसमें लोकेंद्र सिंह गुगलोद व भवानी सिंह दांतीवाडा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। नोखा क्षेत्र के कवलीसर, दावा, सीलवा, भादला, शोभाणा, बूंगड़ी, हंसासर आदि गाँवो में जन सम्पर्क कर हीरक जयंती में आने का निमंत्रण दिया। देचू में तैयारी बैठक संभाग प्रमुख चन्द्रवीर सिंह देणोक, गजेंद्र सिंह खिंवसर तथा क्षेत्र के अनेक गांवों के जनप्रतिनिधि, सरपंचों की उपस्थिति में हुई जिसमें तीन टीमें बनाकर अलग-अलग गांवों की जिम्मेदारी सौपी गई। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में बीदासर मंडल में हेमासर, डूंगरास, बिरंगा, सारोठिया, खारा, जौली, तेलाप, ज्याक, आसरासर, सडू आदि गांवों में जनसंपर्क किया गया। मध्य गुजरात संभाग में काणेटी गांव स्थित दरबार समाजवाड़ी में कार्ययोजना बैठक हुई। बैठक के अंत में हैलीकॉप्टर दुर्घटना में शहीद हुए भारतीय सेना के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ श्री बिपिन सिंह रावत व अन्य सैन्य अधिकारियों को श्रद्धांजलि दी गई। जयपुर की ग्राम पंचायत कुड़ियों का बास और जोरपुरा सुंदरियावास में गजराज सिंह सुंदरियावास ने साथियों के साथ मिलकर हीरक जयंती हेतु संपर्क किया। 9 दिसंबर को दौसा प्रांत में भरतपुर जिले के रूपवास में तथा राजपूत सभा भवन में राजपूत समाज की दो बैठकें आयोजित हुई जिनमें संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। धुवालिया, जूनिया, खनूझ, देवगांव, छाबड़िया, लसाड़िया गांवों में भी संपर्क किया गया। बालोतरा संभाग के कल्याणपुर मंडल में धर्मसर, राठौड़ो की ढाणी, देमो की ढाणी, कांकराला, खारवा, सुरपुरा इत्यादि गांवो में जनसम्पर्क किया गया। कोटा के कंसुआ में गोपाल सिंह के आवास पर भी बैठक आयोजित हुई। लाडनूं सुजानगढ़ प्रांत में डीडवाना मंडल में सुनारी, हीरावती, ओडिंट, मणु, झरड़िया, हुडास, सांडास, ढींगसरी, रोजा, सिलनवाद, तीतरी, तिपनी, सिकराली, मालगांव आदि गांवों में संपर्क करके ग्रामस्तरीय दलों का गठन किया गया। पूर्वी राजस्थान संभाग के ग्राम पोतली, लवाण, मलारना व दौसा जिला मुख्यालय पर बैठकों का आयोजन किया गया। केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा व नानू सिंह रुखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जालोर संभाग में सांचोर प्रान्त के सुरावा मंडल की बैठक महादेवजी मंदिर में प्रान्त प्रमुख महेंद्र सिंह कारोला की उपस्थिति में संम्पन हुई। जैसलमेर व पोकरण संभाग में विभिन्न गांवों में संपर्क किया गया। रामदेवरा, विरमदेवरा, एका व सुजासर गांवों में भी संपर्क किया गया। 10 दिसंबर को अलवर जिले के समूची गांव में हरेंद्र सिंह के आवास पर बैठक का आयोजन हुआ। बांदीकुई (दौसा) में तेज पैलेस में बैठक रखी गई। राजपुताना क्षत्रिय सभा मुरादाबाद द्वारा भी हीरक जयंती में पहुंचने के लिए समाजबंधुओं को प्रेरित करने के उद्देश्य से बैठक रखी गई। जोधपुर के ओल्ड जेएनवीयू कैंपस में भी बैठक आयोजित हुई। बालोतरा संभाग के कल्याणपुर मंडल में ढाणी सांखला, रनिया, दशीपुरा आदि गांवो में जनसम्पर्क किया गया। डेगाना उपखण्ड क्षेत्र में ईडवा, पालियास, तिलानेस, हिम्मत नगर, तामडोली, रेवत, लंगोड़, डेगाना, जालसु कला, आंतरोली, खुडी कलां, दुगौर, दुधडास, बुटाटी गांवों में संपर्क कर जयपुर पधारने का निमंत्रण दिया गया। लाडनूँ मंडल मे दुजार, बेड़, बादेड़, बाडेला, छप्पारा, सांवराद, मिंडासरी, दताऊ, बल्दु, कोयल, निम्बी जोधा, रताऊ, धुड़िला, खामियाद, ननवाण आदि गांवों में जनसंपर्क किया गया।

अजमेर

साणंद (गुजरात) में वाहन रैली का आयोजन

गुजरात में अहमदाबाद ग्रामीण प्रान्त के अंतर्गत साणंद शहर और साणंद तहसील के राजपूत समाज के 21 गांवों में हीरक जयंती संदेश यात्रा (वाहन व बाइक रैली) का आयोजन श्री राजपूत विकास संघ - साणंद के सहयोग से 1 दिसंबर को किया गया। रैली का शुभारंभ जगदीश सिंह वाघेला (सदस्य, अहमदाबाद जिला पंचायत समिति), किशोर सिंह काणेटी (सदस्य साणंद तहसील पंचायत), अरविन्द सिंह झाला (प्रमुख, साणंद शहर कांग्रेस), विश्वनाथ सिंह वाघेला (गुजरात प्रदेश अध्यक्ष युथ कांग्रेस के लिए निर्वाचित) द्वारा किया गया। वाहन व बाइक रैली का आयोजन दो चरणों में हुआ। पहले चरण में रैली चेखला, गरोडीया, गोधावी, काणेटी, सनाथल, रतनपुरा, कोलट, मोटी देवती, मोरैया, पलवाडा, मोडासर तथा पिंपण गांवों में पहुंची तथा दूसरे चरण में विंछिया, कुंडल, रेथल, ददुका, बकराणा, खोरज, खोड़ा, इयावा, वासणा व साणंद शहर में संपर्क किया गया। सभी स्थानों पर समाज बंधुओं द्वारा रैली का स्वागत किया गया तथा पूज्य श्री तन सिंह जी की तस्वीर पर माल्यार्पण करके उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। रैली में शामिल स्वयंसेवकों ने स्थान-स्थान पर समाजबंधुओं से हीरक जयंती की चर्चा कर उन्हें जयपुर आने का निमंत्रण दिया। साणंद वाघेला बोर्डिंग में संदेश यात्रा का समापन किया गया।

जोधपुर में आह्वान रैली

हीरक जयन्ती के प्रचार प्रसार हेतु जोधपुर के नांदड़ी मण्डल में आह्वान रैली का आयोजन किया गया। मोटरसाइकिल सवार स्वयंसेवकों की यह रैली शिकारगढ, तिरुपति विहार से रवाना होकर सैनिक पुरी में जगदम्बा मंदिर पहुंची जहां समाजबंधुओं के साथ बैठक करके हीरक जयन्ती के संबंध में जानकारी प्रदान की गई। यहां से राजेंद्र नगर होते हुए तनायन कार्यालय पहुंची। यहां से ओम नगर कालोनी स्थित जोगमाया मंदिर परिसर पहुंचकर पूज्य श्री तन सिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित करके यात्रा का विसर्जन किया गया। इस वाहन रैली में कैप्टन नारायण सिंह शिकारगढ़, जालम सिंह शिकारगढ, भैरुसिंह ऊचियारडा, समुद्र सिंह आचीणा, भरतपाल सिंह दासपा, उम्मेद सिंह सेतरावा, देवेंद्र सिंह चुरू, नरपतसिंह, रामदेरिया, हनुमान सिंह तापू, गोप सिंह डेरिया, बंजरग सिंह नाड़सर, राजेंद्र सिंह खींवसर, सुनील सिंह डावरा, भवानी सिंह राणीगांव, गुलाब सिंह डावरा सहित लगभग 200 समाजबन्धुओं ने भाग लिया।

सूरत में हीरक जयन्ती संदेश रैली का आयोजन

गुजरात के सूरत शहर में 12 दिसंबर को संदेश रैली का आयोजन किया गया। पृथ्वीराज शाखा, पुष्टि उद्यान आई माता रोड से प्रारम्भ होकर रैली में शामिल वाहनों का काफिला आई माता सर्किल, मॉडल टाउन सर्किल, घोड़ादरा सर्किल, महाराणा प्रताप सर्किल एवं कंगारू सर्किल होते हुए वीर अभिमन्यु गार्डन सारोली पहुंची जहां पर मातृशक्ति द्वारा पूज्य श्री तन सिंह जी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके स्वागत किया गया। मार्ग में विभिन्न स्थानों पर रेबारी समाज, मराठी समाज व राजस्थान राजपूत समाज के कार्यकताओं द्वारा भी यात्रादल का स्वागत किया गया। यहाँ समाजबंधुओं के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें हीरक जयन्ती की तैयारियों पर चर्चा हुई। कार्यक्रम को राजस्थान राजपूत समाज के अध्यक्ष विक्रम सिंह शेखावत व प्रांत प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन भवानी सिंह माडपुरीया द्वारा किया गया। 12 दिसंबर को ही सूरत के ग्रामीण क्षेत्र में भी संदेश रैली निकाली गई। रैली डाम्भा गांव से प्रारम्भ होकर कराडा, तालोड़ा, सलथान होते हुए वाकानेडा गांव पहुंची जहां खोडीयार माता मंदिर प्रांगण में बैठक हुई जिसमें आसपास के गांवों के समाजबंधु व स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

खीमसिंह जी नवापुरा का देहावसान

श्री खीमसिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं चौहटन स्थित श्री भवानी शिक्षण संस्थान के शिल्पकार **श्री खीमसिंह जी नवापुरा** का 11दिसंबर को देहावसान हो गया । 1960 में नगाबेरा शिविर से संघ के संपर्क में आये खीमसिंह जी ने अपने जीवन में 69 शिविर किए। वे 25 वर्षो तक श्री भवानी शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष रहे, 1990 में केलनोर ग्राम पंचायत के सरपंच रहे तथा श्री मल्लीनाथ राजपूत बोर्डिंग हाउस बाडमेर में भी अपनी सेवाएं दी।

रतनसिंह जी नंगली का देहावसान

रतनसिंह जी नंगली

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं सीकर स्थित श्री दुर्गा महिला विकास संस्थान के शिल्पकार **रतनसिंह जी नंगली** का लंबी बीमारी के बाद 12 दिसंबर को देहावसान हो गया। आप सितंबर 1955 में देवगढ़ (भीलवाड़ा) शिविर से संघ के संपर्क में आये और अपने जीवन में 100 शिविरों में शामिल हुए। आप लंबे समय तक संघ के महिला प्रकोष्ठ के प्रभारी रहे एवं बालिका शिविरों में शिक्षण प्रशिक्षण के दायित्व का निर्वहन किया। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org